24.3.1 लोक ऋण का महत्व

इन देशों में लगातार बढ़ते विकास व्यय के लिए वित्त जुटाना एक अत्यधिक कठिन समस्या है। वित्तीय साधनों को जुटाने के सन्दर्भ में ही कर की भूमिका पर बल दिया जाता है। किन्तु, करारोपण की भी सीमाएं हैं। इन सीमाओं के अतिक्रमण के पश्चात् आर्थिक प्रेरणा सम्बन्धी गम्भीर समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। इसलिए वित्तीय साधनों को जुटाने के सिलसिले में लोक ऋण के उपयोग की बात कही जाती है। लोक ऋण की दो विशेषताएं हैं, यथा, स्वैच्छिक प्रकृति या भुगतान की प्रत्याशा। इन्हीं कारणों से इसके सम्बन्ध में आर्थिक प्रेरणाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की कम सम्भावना रहती है।

युद्धोत्तर काल के प्रारम्भिक वर्षों में संयुक्त राष्ट्र (UNO) के विशेषज्ञों ने ऐसा विचार व्यक्त किया कि पिछड़े देशों में कर राजस्व द्वारा सामान्य सरकारी सेवाओं पर होने वाले न्यूनतम चालू व्यय के लिए वित्त प्राप्त किया जाए। वैसे लोक व्यय के लिए ऋण उपयुक्त है जिसके द्वारा पूंजीगत वस्तुओं का सृजन होता है या जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक है। यह क्लासिकल दृष्टिकोण को दोहराना मात्र है। किन्तु, एक विकासशील देश क्लासिकल अर्थव्यवस्था से बिल्कुल भिन्न है। यहां अपने आप बिना सरकारी समर्थन के पूर्ण रोजगार की प्राप्ति नहीं होती है। इसलिए लोक ऋण का क्षेत्र काफी विस्तृत है। लोक ऋण द्वारा ऐसी बचत को उत्पादक कार्यों के लिए जुटाया जा सकता है जो इसकी अनुपस्थिति में संचय कर ली जाती या जमीन तथा बहुमूल्य धातुओं जैसे अनुत्पादक व्यय पर खर्च कर दी जाती।

लोक ऋण द्वारा सार्वजनिक विनियोग के स्तर को ऊंचा किया जा सकता है। इस कारण कुल विनियोग का स्तर भी ऊंचा हो जाएगा जो सिर्फ करारोपण की स्थिति में सम्भव नहीं होता।

एक अन्य तरीके से भी लोक ऋण आर्थिक विकास में योगदान देता है। व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का एक भाग परिसम्पत्ति के रूप में रखना चाहता है जिससे सुरक्षित आय प्राप्त हो। इसके आधार पर विनियोगकर्ता जोखिमपूर्ण व्यवसाय में अधिक धन लगा सकते हैं। स्थिर आय प्रदान करने वाले सरकारी बॉण्ड में विनियोग के कारण जो विश्वास पैदा हुआ उसी ने ब्रिटेन तथा अमरीका में हिस्सा पूंजी (equity capital) के विस्तार में सहायता पहुंचायी।

लोक ऋण के स्तर का निर्धारण जिन कारकों से होता है वे हैं व्यक्तियों तथा व्यवसायियों के उधार देने की योग्यता एवं इच्छा तथा सरकार की कर लगाने की शक्ति तथा इच्छा। निम्न समीकरण द्वारा ऋण के उच्चतम स्तर को बताया जा सकता है :

$$D = \frac{Y_t - C}{r}$$

जहां D = राष्ट्रीय ऋण की अधिकतम मात्रा, C = साधारण सरकारी क्रियाओं पर स्थिर व्यय, t = कर की दर तथा राष्ट्रीय आय (Y) का उच्चतम अनुपात तथा r = सरकारी ऋण पर ब्याज दर।

24.3.2 लोक ऋण की तकनीक

ऋण प्राप्त करने के चार प्रमुख तकनीक या स्रोत हैं, यथा :

(क) बाजार से ऋण प्राप्त करना;

(ख) छोटी बचतों के द्वारा;

(ग) अस्थायी ऋण; तथा

(घ) केन्द्रीय बैंक से ऋण।

उपर्युक्त चार तकनीकों को दो विस्तृत वर्गों में बांटा जा सकता है, यथा—बाजार ऋण (market borrowing) तथा गैर-बाजार ऋण (non-marketing borrowing)। बाजार ऋण के अन्तर्गत वैसे उधार को रखा जाता है जो जनता से विनिमयसाध्य सरकारी प्रतिभूतियों तथा बिल को बेचकर प्राप्त किया जाता

Scanned with CamScanner

है। इन्हें पूंजी तथा मुद्रा बाजार में बेचा जाता है तथा इनकी बाजार कीमत को उद्धृत किया जाता है। गैर-विनिमयसाध्य उपकरणों, जिन्हें बाजार में खरीदा-बेचा नहीं जा सकता, के जरिए उधार प्राप्त किए हैं तो उन्हें गैर-बाजार ऋण कहा जाता है। ऐसे ऋण के उदाहरण हैं राष्ट्रीय बचत सर्टिफिकेट तथा में बचत खाते में जमा राशि।

स्थायी या निधिक ऋण (permanent of funded debt) वे हैं जिन्हें 12 महीने से अधिक लिए जारी किया जाता है। इनका भुगतान ऋण जारी करने की तिथि से 12 महीने बाद होता है। दो तरह के हो सकते हैं—विशेष अवधि के लिए या अनिश्चित समय के लिए। पहले को समाप्य निधिक (terminable funded debt) तथा दूसरे को असमाप्य निधिक ऋण (interminable funded debt) जाता है।

तैरता या अस्थायी (floating or temporary) ऋण पूर्णतः अस्थायी होता है। इसका भुगतान जारी करने के 12 महीनों के अन्दर ही किया जाता है। सामान्यतः अनिधिक ऋण (unfunded debt) तैरता ऋण कहा जाता है।

मुद्रा तथा पूंजी बाजार एवं आर्थिक तथा वित्तीय संस्थाओं की विभिन्नताओं के कारण विभिन्न विकास देशों में ऋण की पृथक् तकनीकों का उपयोग किया जाता है। कुछ देश प्रमुख रूप से वित्तीय संस्थाओं आम जनता से उधार लेते हैं।

कभी-कभी सरकार अनिवार्य उधार ले सकती है। चूंकि इसमें क्रय शक्ति का जबरन (forced) स्थानान होता है, अतः यह करारोपण के सदृश्य है। अनिवार्य (compulsory) उधार लेने के पीछे दो तर्क दिए हैं। प्रथम, उत्पादन पर पड़ने वाले कर के कुछ प्रतिकूल प्रभावों से बचा जा सकता है या उन्हें न्यूनतम जा सकता है। द्वितीय, अतिरिक्त करारोपण के विरुद्ध उठायी जाने वाली कुछ राजनीतिक आपत्तियों से जा सकता है। सामान्यतः ऐसे उधार को आयकर के साथ जोड़ा जाता है। किन्तु, पेरू में इसे निर्यात पर किया गया तथा नेपाल में कृषि उत्पादन के साथ। अनिवार्य ऋण साधारण ऋण तथा कर का संकर (hybrid) है। अतः इसमें दोनों के ही कुछ-कुछ दोष आ जाते हैं। भुगतान की प्रत्याशा के कारण यह क्रय-शक्ति नियन्त्रित करने में कम सफल हो सकती है। यदि भुगतान के सम्बन्ध में सन्देह हो तो ऋण के लाभ मिलेंगे।

Scanned with CamScanner